दैनिक जागरण, भोपाल 3 FEB 2010

वहाँ पलायन की कहानी पुरानी हो गई

झाबुआ के वनवासियों के हालात में आये सार्थक बदलाव को रेखांकित कर रही हैं स्वाति तिवारी

क्या आपने कोई ऐसी जगह देखी है जो आम और महुए से महकती हो? पलाश के सूर्ख पुष्पों से दहकती हों और ढोल ढमाके और माँदल की थाप पर थिरकती हों? एक विलक्षण सी दुनिया जो लोगों में हमेशा जिज्ञासा का विषय रही है, विश्व की एक आदिम सभ्यता जिसके अध्ययनों ने यह रोचक तथ्य उजागर किया हैं कि अपने जीवन्त संस्कारों,परम्पराओं और रीति-रिवाजों के कारण इस समाज की तुलना यूरोपीय समाज से की जा सकती हैं। सभ्यता के तमाम संपर्क के बावजूद उनकी दुनियां में अभी बहुत कुछ अलग हैं जो चकित करता हैं। एक ऐसी सभ्यता जिसका उसकी धरती, पेड़, नदी से रिश्ता अब भी अपनी समग्रता में ही व्यक्त होता हैं। उनका अपना एक सौन्दर्य हैं, उनकी अपनी सम्पन्न समृद्ध परम्पराएं। मध्यप्रदेश की दक्षिणी -पचिमी सीमा पर फैले हुए झाबुआ और अलीराजपुर जिले विश्व की आदिम सभ्यता को आज तक अपने वनांचल में समेटे हुए- संरक्षित रखे हैं। दुनिया इन्हें आदिम कहे चाहे कुछ और पर सच यह हैं कि यहाँ की प्रकृति का अपना अलग वजूद, सभ्यता है एवं सांस्कृतिक पहचान है।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में भी चन्द्रशेखर आजाद के नाम के साथ यह क्षेत्र स्वर्णिम अक्षरों में उल्लेखित है। प्रकृति की गोद में जीवन-यापन करने वाले यहाँ के वनवासी स्वभाव से स्वच्छन्द और स्वतंत्र होते हैं। यहां के प्रणय उत्सव भगोरिया की अपनी विशिष्ट पहचान हैं। दुनिया के तमाम छल-कपट से दुर यहां का आदिवासी बहुत ही भला और मासूम है लेकिन अभी हाल के वर्षों को छोड़ दें तो 1960 से लगातार सूखे की मार झेल रहे इन आदिवासियों को अपनी रोजी-रोटी का साधन जुटाने के लिये कुछ न कुछ तो करना होता था चाहे वह फिर अपराध ही क्यों न हो। यूँ तो आदिवासी की आवश्यकताएं सीमित होती हैं किन्तु आवश्यकताएँ आधुनिकता और सामाजिक जागरूकता के अनुपात में बढ़ती भी है फिर भूख एक ऐसी आवश्यकता को जन्म देती है कि व्यक्ति भला-बुरा सब भूल जाता है। अभी कुछ वर्षों पुरानी बात है कि रोजगार की तलाश में आदिवासियों को पलायन के लिए बाध्य होना पड़ता था। अपराध और पलायन दोनों की तह में जाने पर झाबुआ का जो सच सामने आता हैं उसमें 'खाद्य सुरक्षा' ही रेखांकित होती है। सामान्यतः आदिवासी क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होते है किन्तु झाबुआ -अलीराजपुर की बिडम्वना है कि यहाँ यह सच नहीं हैं। यह क्षेत्र अतिशोषित और तेजी से खत्म हो रहे संसाधनों का जिला रहा है। सघन जंगलों से घिरा एक पहाड़ी क्षेत्र जहाँ वनवासी हैं पर वन नहीं है। वनस्पति अपघटन और मृदा क्षरण ने पहाड़ियों को नग्न कर दिया हैं। कुल कृषि क्षेत्र का 36 प्रतिशत ऐसा हैं जिस पर कोई मृदा आवरण नहीं हैं। कमजोर संसाधन और आदिवासियों का आर्थिक आधार भी कमजोर। ऐसे में गरीबी और भूख का विस्तार ऐसा कि 'पलायन' एक रास्ता बचता है जीवन बचाने का। विगत पाँच वर्षों के शासन के विभिन्न प्रयासों, योजनाओं और रोजगार मूलक कार्यों ने इस आदिवासी अंचल की दशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। शिक्षा प्रसार व विकास के लिए किए गये कार्यों से यहाँ अपेक्षित परिणाम दिखाई देने लगे हैं। प्रदेश के झाबुआ जिले में इन दिनों रोजगार के लिये पलायन की समस्या नहीं है बल्कि जिले में पर्याप्त मात्रा में रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री अपने दो दिवसीय भ्रमण में 'आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश' के आह्वान के साथ अपने वनवासी भाईयों से रूबरू होने जा रहे है। उनका पहला पड़ाव है अलीराजपुर क्षेत्र - यह क्षेत्र एक ऊबड़-खाबड़ मैदान है जिसको हथनी और सुकड़ नदियों का अपवाह मिलता है। इस क्षेत्र में ताड़ी के कई पेड़ है जिसका रस आदिवासियों का प्रिय पेय है। फसल की दृष्टि से यहाँ कपास एवं मूंगफली अच्छी होती है। कृषि और पशुपालन की अच्छी संभावनाएं मौजूद हैं। अलीराजपुर के पास उद्यानिकी की भी बड़ी गुंजाइश है। एक वक्त ऐसा भी था जब यहाँ पलायन दर 33.6 प्रतिशत थी। अत्यधिक अपराध दर चिन्ता का मुख्य मुद्दा था। कुछ वर्षों पहले तक अलीराजपुर झाबुआ जिले की एक तहसील था, तब पूरे एशिया में सर्वाधिक हत्याएं इसी क्षेत्र में होती थी। पर अब दृश्य बदल गया हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 1960 के बाद यह क्षेत्र सूखे की चपेट में आता रहा है और करीब एक लाख मजदूर काम की तलाश में पलायन करते थे, पर अब जब हर हाथ को काम और भूखे को भोजन मिलेगा तो क्यों कर अपना वतन-अपनी जमीन छोड़ेगा। मुख्यमंत्री झाबुआ में सबसे पहले वे रानापुर जायेंगे। रानापुर में 13.8 प्रतिशत भूमि बंजर है जिस पर हरीतिमा नहीं है। उद्यानिकी की संभावनाओं को देखते हुए यहाँ ड्राई लैण्ड उद्यानिकी फसलों की संभावनाओं को विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। इसे क्षेत्र के आदिवासियों का सौभाग्य ही कहा जायगा कि प्रदेश का मुखिया उनके बीच, उनकी समस्याओं से रूबरू हो रहा है। झाबुआ का अगराल का दौरा करेंगे। यह क्षेत्र रोलिंग मैदान जैसा है जिसमें बीच -बीच में पहाड़ियां हैं। यहाँ अनास नदी और उसके सहायक नगरी वाले अपवाह तंत्र हैं। कृषि भूमि प्रायः अच्छी है। मेघनगर जिले का सर्वश्रेष्ठ औद्योगिक स्थान हैं। पेटलावद वाया थांदला का भ्रमण भी महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। ये क्षेत्र अपेक्षाकृत विकसित कहे जा सकते हैं। थादंला के नगरीय क्षेत्र के समावेश से इस क्षेत्र का जनसंख्यात्मक चेहरा थोड़ा भिन्न है और गैर आदिवासी अनुपात साक्षरता व कृषि इतर कार्यों में श्रमाक्ति का नियोजन यहाँ ज्यादा है। तेंदूपत्ता भी यहाँ के जंगल में मिलता है। चारा और घास भी अच्छी होती है। गहरी काली मिट्टी और भूमिगत जलस्तर बेहतर रेल और सड़क संबद्धता भी बहुत अच्छी है। चारा अच्छा है तो डेयरी एवं पशुपालन के लिए यहाँ वेटनरी शिक्षा एवं योजनाएं युवावर्ग को रोजगार के लिए संबल बन सकती है। आदिवासी विरासत को बरकरार रखते हुए मुख्यमंत्री इन वनवासियों के लिए नई सोच के साथ कल्याणकारी योजनाएँ बनाने और उन पर सार्थक अमल करवाना चाहते है। यह मुख्यमंत्री की संजीदगी का ही परिणाम है कि आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश अभियान के तहत दो दिन तक आदिवासियों से रूबरू हो रहे हैं। वे यह देखना चाहते है कि आदिवासी सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ ले पा रहे है या नहीं। उम्मीद की जानी चाहिये कि मुख्यमंत्री की यह यात्रा आदिवासियों की खुाहाली और समृद्धि के नये युग का सूत्रपात करेगी।

(लेखिका प्रसिद्ध साहित्यकार हैं)